सबसे गरीब लोगों के जीवन को प्रभावित करने वाले कुछ उल्लेखनीय आजीविका मॉडल

- **अन्नपूर्णा मॉडल:**
  "अन्नपूर्णा" खेती करने की एक प्रणाली है। यह सीमांत और काश्तकार किसानों को खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती है और इसका लक्ष्य भूख की समस्या से निज़ात दिलाना है। यह मॉडल आंध्र प्रदेश राज्य में लागू है।
- **पशु सखी मॉडल:**
  राज्स्थान में सामुदायिक पशु चिकित्सा परा-चिकित्सा कैडर कार्य कर रहा है।
- लाख और टसर की **वैज्ञानिक खेती और कटाई**

- ☑ प्रत्येक सबसे गरीब परिवार को दो आजीविका को सुदृढ़ करना होगा
- ☑ सभी महिला किसान किसान वैज्ञानिक और समुदाय ज्ञान प्रचारक होते हैं
- ☑ एमकेएसपी के अंतर्गत शामिल क्षेत्र स्थानीय उत्कृष्ट पद्धति स्थल – गरीब समर्थक आजीविका समाधानों का विकास करने के इनकुबेशन सेंटर होते हैं
- ☑ उत्कृष्ट पेशेवर किसान सीआरपी (सामुदायिक संसाधन व्यक्तियों) के रूप में संचार विस्तार नेटवर्क का केन्द्र बिंदु होते हैं।

भूमिहीन मजूदर से कुशल किसान और समुदाय विस्तार कार्यकर्ता: एक एमकेएसपी कहानी

सुनैना देवी और उसका परिवार के सात सदस्यों को अपनी दो वक्त की जरूरतों को पूरा करने के लिए कठिन परिस्थितियों में मजदूरों के रूप में कार्य करना पड़ता था। महँगे रासायनिक उत्पादक सामग्रियों तथा साहूकारों द्वारा वसूली जाने वाले अनाप-शनाप दरों के कारण खेती करना फायदे का सौदा नहीं रह गया था।

इसी दौरान, वह वर्ष 2011 में अपने गांव में राधा जीविका स्व-सहायता समूह में शामिल हुई; और एसएचजी अभियान का हिस्सा बनीं, जो बिहार में दबे पांव अपनी जगह बना रहा था। उसके गांव के संगठन द्वारा नियुक्त गांव संसाधन व्यक्ति (वीआरपी) के सतत् मार्गदर्शन और सहायता से प्रेरित होकर और उसके एसएचजी से 10,000 रुपए ऋण पर मिलने से उसने 10 कट्ठा भूमि पट्टे पर ली। सुनैना देवी ने इस मामूली से ऋण से इस भूमि पर सब्जियां और अनाज की बहु-फसलें उगाना प्रारंभ किया और उसे अपने घर पर ही वीआरपी की सहायता मिली। अपने आत्म-विश्वास से उत्साहित होकर, उसने अपने एसएचजी से 12,000 रुपए का और ऋण लिया, जिसने उसे अपने ऋण के दुष्चक्र और अपने गांव के साहूकारों के चंगुल से मुक्ति दिलाई।

यद्यपि शुरुआत में वह अनिच्छुक थी, किंतु आज सुनैना देवी बहु-स्तरीय फसल तकनीक अपनाते हुए एसआरआई पद्धति द्वारा सब्जियां उगाती है। उसने दुग्ध पालन में अच्छी किस्म का पशुधन उत्पादन और प्रबंधन पद्धतियां भी अपनाई हैं और दूध की बिक्री से पर्याप्त आय भी कमाई है, जिसने उसकी घरेलू खाद्य और पोषण सुरक्षा में व्यापक सुधार किया है। आज सुनैना देवी को एक विशेषज्ञ किसान के रूप में जाना जाता है और वह सीआरपी को अपनी सेवाएं देती हैं।

उन्होंने बेहतर उन्नत पद्धतियों के लिए अपनी साथी एसएचजी सहसयों को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिसके परिणामस्वरूप उसके गांव में गरीबों की आय और घरेलू खाद्य सुरक्षा में वृद्धि हुई है।

ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार
http://aajeevika.gov.in/

महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना

कृषि में बदलाव से जिन्दगियां बदलते हुए

ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा **"महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना"** (एमकेएसपी) को वर्ष 2010-11 में दीनदयाल अंत्योदय योजना – एनआरएलएम (डीएवाई–एनआरएलएम) के एक उप-घटक के रूप में शुरू किया गया था। एमकेएसपी का उद्देश्य छोटी जोतों के किसानों की स्थायी पद्धतियों में दक्षता बढ़ाना; जलवायु परिवर्तन के **अनुरूप कृषि-पारिस्थितिकी अपनाना, उन्नत पशु पालन पद्धतियों द्वारा पशु सखी को बढ़ावा देना**, और स्थायी सुधार तथा **गैर-इमारती वन उत्पाद (एनटीएफपी)** की कटाई है।

"इसका उद्देश्य कम से कम दो आजीविका चरणों से परिवार की आय को पर्याप्त रूप से बढ़ाना, और समुदाय संसाधन व्यक्तियों" के रूप में उभरने के लिए समुदाय उत्कृष्ट पेशेवरों का कौशल निर्माण करना है।

इस कार्यक्रम को डीएवाई-एनआरएलएम द्वारा राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन, समुदाय आधारित संगठनों (सीबीओ) और एनजीओ की भागीदारी से कार्यान्वित किया जाता है – जो देश भर में कार्यान्वयन भागीदार (पीआईए) हैं।

व्यापक कार्यान्वयन नीति

1. भागीदारों (सीबीओ / एनजीओ / एसआरसीएम) द्वारा कार्यान्वित एमकेएसपी परियोजनाएं।
2. अत्यधिक गरीब लोगों को लक्षित करते हुए कृषि, एनटीएफपी और पशुधन पर स्थायी मॉडलों को प्रोत्साहित करना।
3. सामाजिक पूंजी (समुदाय संसाधन व्यक्तियों / पशु सखियों / कुशलता प्राप्त कार्यकर्ताओं) का सृजन।
4. सामाजिक पूंजी की मदद से अत्यधिक गरीबों के सफल मॉडलों को प्रोत्साहित करना।

एमकेएसपी हितधारक

पीआईए – परियोजना कार्यान्वयन एजेंसी। डीएवाई-एनआरएलएम – दीनदयाल अंत्योदय योजना – एनआरएलएम। एसआरएलएम – राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन। सीआरपी – समुदाय संसाधन व्यक्ति महिला किसान

एमकेएसपी के अंतर्गत अनिवार्यता

एमकेएसपी परियोजनाओं को निम्नलिखित दिशा-निर्देशों का अवश्य पालन करना चाहिए।

- भूमिहीन, छोटे और सीमांत किसानों (सबसे गरीब लोगों) पर अत्यधिक ध्यान केन्द्रित किया जाए।
- साधारण गरीब संस्थानों (एसएचजी) के आधार पर ही विभिन्न कार्यकलापों को प्रोत्साहित किया जाता है।
- गैर-कीटनाशक प्रबंधन जैसी पद्धतियों को बढ़ावा देना, स्थायी सुधार और गैर-इमारती लकड़ी वन उत्पाद और बेहतर पशुधन उत्पादन और प्रबंधन पद्धतियों जैसे पद्धतियों को बढ़ावा देना।
- समुदाय संसाधन व्यक्तियों (सीआरपी) और पशु सखियों का समुदाय उत्कृष्ट पेशेवरों से सृजन करना।
- घरेलू और सामुदायिक स्तर पर खाद्य और पोषण सुरक्षा को प्रोत्साहित करना।

एमकेएसपी: कुछ प्रमुख कार्यकलाप नीतियां

- जलवायु परिवर्तन सुधार, समुदाय प्रबंधित स्थायी कृषि को प्रोत्साहन देना।
- कीटनाशी प्रबंधन और मृदा उर्वरता प्रबंधन के लिए स्थानीय रूप से उपलब्ध प्राकृतिक उत्पादक सामग्रियों का प्रयोग करना।
- विभिन्न फसलों के लिए जड़ विस्तार प्रणाली (एसआरआई)
- बहु फसलों, बाजरा और अनाज फसलों को प्रोत्साहित करना
- घरेलू खाद्य सुरक्षा के लिए किचन गार्डन / घरों में उद्यान लगाने को प्रोत्साहित करना
- वृक्ष आधारित खेती पद्धतियां
- खेती के साथ पशुधन का एकीकरण करना
- सतत् कटाई और एनटीएफपी में सुधार

उपलब्धियां

एमकेएसपी के अस्तित्व में आने के बाद से, **822 करोड़ रुपए** के कुल परियोजना परिव्यय **से 119 जिलों, 1,067 ब्लॉकों** और **20,362 से अधिक गांवों** को कवर किया गया है, और **33.35 लाख** से अधिक **महिला किसानों** तक अपनी पहुंच बनाई है।

सारे आँकड़े अक्टूबर 2015 के अनुसार